राज
कामिक्स
विशेषांक
मूल्य 16.00 संख्या 71
विषकन्या
नागराज
एक आकर्षक
स्टीकर मुफ्त

RAHUL
BOOKS
ध के दोस्त और मानवता के दुश्मन उन लोगों के भी दुश्मन बन जाते हैं जो अपराध के दुश्मनों को मिटाने और
ता की रक्षा के लिए अपना जीवन दावं पर लगा देते हैं। जैसे- 'महानगर' से अपराध की गंदगी को मिटाने
के रूप में पहुंच चुका है 'नागराज'...
ो निश्चित रूप से कहीं सक्रिय हैं उसके दुश्मन भी-
य राक्षस
लगंट!...
आहुति स्वीकार करें!
जय राक्षस गरलगंट!...
...देव कालजयी के विष से बुझे इन फलों की मैं स्वाहा करता हूं।
a Pocket Books
amaan.cooldude18

इस हवन का स्थान है नागद्वीप -
63 डिग्री अक्षांश और 9 डिग्री देशांतर पर भारतीय महासागर से घिरा इच्छाधारी सांपों का एक रहस्यमय संसार...
...जहां पर जन्म ले रहा है एक षड्यंत्र-
सारी आहुति यज्ञकुंड में डाल यक्ष राक्षस!
...अब मैं अप आहुति दे रहा हूं। मुझे दर्शन दे दे, या इस अग्निकुंड को चिता बना लूंगा।
तभी-
हम तुम पर प्रसन्न हुए नागमणि द्वीप के राजतांत्रिक विषंधर!...
...मांगो, क्या मांगते हो?
मुझे देव कालजयी के वरदान से पैदा हुए नागराज को खत्म करने की शक्ति चाहिए यक्ष राक्षस गरलगंट!
यह मांगकर तूने हमको अति प्रसन्न किया है विषंधर! देव कालजयी तो मेरा परम शत्रु है।...
...उसके वरदान द्वारा हुए किसी भी प्राणी से बढ़कर कोई और हो ही नहीं सकता।
ले! नागराज की मौत के लिए मैं अपनी ही शक्ति से उत्पन्न करता हूं नागराज की मौत को!...
...प्रकट हो!...

विषकन्या

कथाः अनुपम सिन्हा, तरुणकुमार वाहीः चित्रः अनुपम सिन्हाः इंकिंग : विठ्ठल कांबले, विनोद कुमारः
सुलेख व रंग : सुनील पाण्डेय : सम्पादक : मनीष गुप्ता :

...वहां से धुआं उठकर दूर तक फैलता ही है-
नागमणि द्वीप के पास के द्वीप पर किए गए इस यज्ञ का धुआं हवा में फैलता हुआ...
...नागमणि द्वीप में स्थित, महात्मा कालदूत की गुफा तक भी जा पहुंचा था जो एक लम्बी समाधि से अभी-अभी उठे थे-
ओह! कहीं आस-पास में कोई महायज्ञ किया गया है...
...लेकिन यह महायज्ञ किसने किया है, और क्यों किया है! मुझे इसका पता लगाना होगा!
और महानगर स्थित- भारती कम्युनिकेशन लिमिटेड में-
मिस भारती, आपने 'नई महाभारत' के टाइटिल से बने इस सीरीयल के पायलट शो को तो देख ही लिया...
...मुझे ये बहुत पसन्द आया है। और मैं इन्हें अपने चैनल पर टैलिकास्ट करवाना चाहता हूं!...
...लेकिन स्वीकृति तो आप ही देंगी। क्योंकि कंपनी का मैनेजमेंट अब आपके हाथों में है।
आपकी क्या राय है, मिस्टर राज?
सीरियल्स तो जरूर दिखाए जाने चाहिए। क्योंकि किसी भी चैनल की आय का मुख्य स्रोत विज्ञापन ही है...
...जो अच्छे सीरियल्स के कारण चैनल को मिलते हैं।

किन्तु ये सीरियल्स घर के बड़े-बूढ़ों से लेकर बच्चों तक में लोकप्रिय होते हैं। इसलिए व्यर्थ की हिंसा वाले दृश्यों को हटाकर ही इन्हें प्रसारित करना उचित होगा...
...और इस 'नई-महाभारत' में ऐसे दृश्यों की भरमार है।
ऐसे दृश्यों को हटाने के बाद ही, इसके प्रसारण पर विचार किया जाना चाहिए।
मेरी भी यही राय है!
ठीक है। फिलहाल मैं इस सीरियल के प्रोड्यूसर से सारे आपत्तिजनक दृश्यों को हटाने को कहता हूं।
लेकिन उससे हटने को कौन कहता, जो एक स्टूडियो से निकलकर भगदड़ मचाता वहां आ पहुंचा था-
सांप!
स्टूडियो 4
भागो!
भगदड़ व तेज चीखों ने भारती व मिस्टर राज को भी जहां का तहां जाम कर दिया था-
ये सांप कहां से आ गया?
बचिए मैडम, ये आपकी तरफ आ रहा है!
य...ये तो सचमुच ही हमारी तरफ आ रहा है मैडम भारती!
हिस्स

वेदाचार्य की पोती और नागाकुल की कन्या भारती को भला सांप क्या डरा पाता, मगर ये भारती के लिए भी महान् आश्चर्य के पल थे-
सांप की तो सपेरे की टोकरी में भी देखकर मेरे होश मेरे काबू में नहीं रहते।
!
...जो व्यक्ति एक सांप से डरता है वह कभी नागराज नहीं हो सकता।
इसीलिए राज के रूप को मैंने इस रूप में ढालने का निश्चय किया ताकि किसी को मेरे नागराज होने का रत्ती भर भी कभी संदेह न हो पाए।
मैडम ये फाइल...
...ओह सांप!
किन्तु ये सांप जहरीला है और इसके विषदंत भी सलामत हैं।...
...और ये किसी भी क्षण उस लड़की के लिए खतरा बन सकता है।
इसे मानसिक संदेश भेजकर इसके द्वारा होने वाले किसी भी अनर्थ को मैं इस रूप में भी फौरन रोक सकता हूं।
नागराज का मानसिक संदेश ग्रहण करते ही सांप का फन आज्ञाकारी बच्चे की तरह झुकता चला गया था और तब उसके मालिक सपेरे ने आकर उसे दबोच लिया-
न जाने कैसे कम्बख्त शूटिंग स्थल से अपनी टोकरी से निकल आया!

दुनिया में ऐसे जीवों की पूरी सूची पर प्रतिबंध लगाना चाहिए।
नहीं! बल्कि ऐसे खतरों का म... मुकाबला करना चाहिए।
हां! तुम्हारी तरह टेबल पर चढ़कर।
बेचारे नहीं जानते थे कि किसका मज़ाक उड़ा रहे हैं–
विश्व आतंकवाद के दुश्मन नागराज का। जिसके जिस्म में वास करते हैं लाखों सर्प...
...जो उसके एक इशारे पर उसके लिए अपने प्राणों की बलि तक दे देते हैं–
RAJ FUNISHINGS
राज! मुझे तुम्हारा ये रूप आश्चर्यजनक लगा कि सांपों को अपनी उंगलियों पर नचाने वाला नागराज, राज के रूप में सांपों से डरता है। वाऊ।
मेरा कौन सा रूप तुम्हें आश्चर्यजनक नहीं लगता मैडम भारती!
अभी तक तो चारों तरफ शान्ति नजर आ रही थी–
मगर यहीं पर बहुत कुछ घटना था–
मेरी सर्प-इन्द्रियां मुझे अपने आस-पास सैकड़ों सांपों के होने का संकेत दे रही हैं।...
...संकेत उस कार से आ रहे हैं...
...और सैकड़ों सांपों के संकेत किसी कार से मिलना मुझे ये जाहिर करते हैं कि...
... कार में कोई और नहीं बल्कि खुद...

...नागराज है। जिसके शरीर में वास करते हैं सैकड़ों सांप। और जिसकी मुझे तलाश है।
रहस्यमय किरणें कार से टकराई...
SAREES
...और गड़बड़ शुरू हो गई–
तुम्हारी वातानुकूलित कार में अचानक ठंड असामान्य रूप से बढ़ने लगी है भारती।
पता नहीं, अचानक क्या हुआ है? मैं एयरकंडीशनर बन्द कर देती हूं।
ये... ये क्या?
'ऑन-ऑफ' काम नहीं कर रहा है। और...
...ठंड और बढ़ गई है राज।
एयरकंडीशनर इतनी ज्यादा ठंड पैदा नहीं कर सकता भारती! कुछ और ही चक्कर लगता है।
गाड़ी तुरन्त रोक दो।
ओ गॉड! ये तो कार का पूरा कंट्रोल ही फेल हो गया है। कार मेरे नियंत्रण... (किट-किट) में नहीं है र... राज... किट-किट...
कार के शीशे भी नहीं खुल पा रहे हैं।
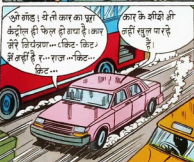
नागराज भी अपनी कंपकंपी को रोक पाने में असफल था-
ओह! मुझे खून का दौरा रुकता सा महसूस हो रहा है।
ये शीशा भी नहीं टूट पा रहा है। बुलेट-प्रूफ शीशे में ये एक बहुत बड़ी बुराई है।
ठक
ठक
मैं इस स्पर-कंडीशनर को ही उखाड़ कर बाहर निकाल देता हूं।...
...शायद इससे कुछ काम बन जाए!
कड़ड़च
कोशिश कामयाब तो हुई...
...लेकिन पलक झपकते ही कार के अंदर का प्रत्येक हिस्सा स्वरेस्ट की चोटी की तरह बर्फ से ढका नजर आने लगा था-
ओह! स्पर कंडीशनर के साथ-साथ उसके 'कूलिंग क्वायल्स' भी बाहर निकल आए हैं।...
...और उनसे बर्फ की फुहार छूट रही है।
नागराज! मेरी आंखों के आगे अंधेरा छा रहा है।
अपने-आप को संभालो भारती! मेरा कोट ओढ़कर कार संभालने की कोशिश करो...
...तब तक मैं नागराज के रूप में आकर, कार को रोकने का कोई तरीका सोचता हूं।

कार के अंदर अत्यधिक ठंड के कारण शीशों पर नमी जम गई थी, और बाहर का कुछ भी नजर आना बंद हो गया था-
कार किस खतरे की तरफ बढ़ रही थी, यह न तो भारती को मालूम था और न ही नागराज को-
स्यर-कंडीशनर के निकलने से बने इस छेद से मैं और भारती तो बाहर नहीं निकल सकते...
...लेकिन मेरी नागरस्सी जरूर बाहर निकल सकती है...
...जो कार को रोकने का रास्ता ढूंढ़ ही लेगी।
इंजन के बीच से रास्ता बनाते हुए नागरस्सी सड़क तक आ गई थी-
और इधर स्क भयंकर हादसा कुछ ही पलों की दूरी पर था-
क्योंकि नागराज की कार स्क बिजली के खंभे की तरफ बढ़ रही थी-
लेकिन वह हादसा हो नहीं सका...
...क्योंकि जान लेने वाले खंभे के साथ-साथ स्क जान बचाने वाला खंभा भी मौजूद था-

कार तो रुक गई थी, लेकिन-
ये दरवाजा अभी भी नहीं खुल रहा है। और भारती ठंड से बेहोश हो गई है...
...और ये ठंड तब तक कम नहीं होगी, जब तक दरवाजा नहीं खुले...
नागराज की सोच पूरी हो पाने से पहले ही...
...कार का दरवाजा अपने-आप खुला...
...और नागराज को बाहर घसीट लिया गया-
ओह! अब ये मुसीबत कहां से आ गई?
नागराज के बाहर निकलते ही, कार का दरवाजा अपने-आप बंद हो गया-
तूने मुझे ठीक पहचाना नागराज!...
...मैं सचमुच तेरे लिए मुसीबत का ही रूप हूं...
...और इस मुसीबत का नाम है ... 'अष्टसर्प'!
तड़क
ओह! तो ये है सारी गड़बड़ की जड़!

यह कार को अपनी भुजाओं में कसकर उसका मलीदा बनाने पर तुला हुआ है। और भारती कार के अंदर ही है।
CELLULAR
भारती को बचाने के लिए मुझे इस शैतान अष्टसर्प को, कार से दूर हटाना पड़ेगा...
...और ये तभी दूर होगा...
SCHOOL BUS
तड़
...जब मैं उसके करीब जाऊंगा।
अब ये अचानक कार से दूर हट रहा है। ओह, समझा!...
...इसका कारण गाड़ी का अत्यधिक ठंडा होना है। ज्यादा ठंड से सर्पों की हृदय गति कम होने लगती है और खून का दौरा भी रुकने लगता है।

☆ फ्रास्ट बाइट= बर्फ के कारण शरीर का गलना -

मेरी शारीरिक शक्ति इसकी भुजाओं को मेरे शरीर से अलग नहीं कर पा रही है।...
...इनको अपने शरीर से अलग करने के लिए मुझे अपनी नागशक्तियों का प्रयोग करना पड़ेगा।
नागरस्सी के रूप में नागराज के शरीर से निकले सर्प, अष्ट सर्प की भुजाओं पर कस गए-
और उस नागरस्सी के दूसरे छोरों ने अलग-अलग स्थानों पर अपनी पकड़ बनानी शुरू कर दी-
और एक मजबूत झटके के साथ ही अष्ट सर्प की भुजाएं नागराज के शरीर से अलग हो गईं-
NIK
CONTACT 7221410
वाह! मेरी सर्प सेना ने आखिरकार अपना काम दिखा ही दिया।...
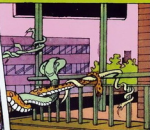
मगर वह सर्प रस्सियां, ज्यादा देर तक अष्ट सर्प को बांधकर नहीं रख पाईं –
यों ऽऽऽ
देखते ही देखते सर्प-रस्सियां अदृश्य हो गईं –
अरे! ये तो आजाद हो गया। और मेरी सर्प सेना भी अदृश्य हो गई है। पर कहां? मैंने न तो उनको वापस बुलाया...
...और न ही उनको अपने रोम छिद्रों से अंदर घुसते महसूस किया...
...अब मुझे ध्यान आ रहा है कि वे सर्प भी गायब हो चुके हैं, जिनको मैंने कार को रोकने के लिए भेजा था।...
... कहीं कोई मेरी शक्तियों को तो नहीं चुरा रहा। आह!...
... इस सवाल पर बाद में गौर करूंगा। फिलहाल तो मुझको इस अष्ट सर्प नाम की मुसीबत से बचने का रास्ता खोजना है!
तड़ाक

...और इसको रोकने का तरीका मेरे सामने है। लेकिन वह तरीका तभी काम करेगा...
...जब इस कार का दरवाजा फिर से लॉक न हो गया हो!
वाह! बन गया काम!
अब दरवाजा खुल रहा है...
...अब अगर मैं इस कार में प्रवेश करूं...
...तो यह मेरे पीछे जरूर आएगा...
...लेकिन उतनी देर में मैं दूसरे दरवाजे से भारती को बाहर निकाल कर, इधर वाला दरवाजा बंद करके...
...बेहोश भारती को यहीं पर सुरक्षित छोड़कर...
...तेज गति से इसके पीछे पहुंच जाऊंगा। और इसको कार के अंदर धकेलकर...
तड़
...इधर वाला दरवाजा भी बन्द कर दूंगा...।
धमम
नागराज का उपाय काम कर गया-
कहानी 19वें पृष्ठ से जारी

★ क्या तुम ठीक हो नागराज?

...लेकिन किसी का भी ध्यान कार के नीचे से निकलकर गटर में समा रही उस भयंकर नागिन की तरफ नहीं था जो इस पूरे युद्ध को छिप कर देख रही थी।
...या शायद था-
कामयाबी! हा हा हा!
और फिर हॉस्पिटल में-
मिस भारती! आप कैसी हैं? मैं तो घबरा ही गया था!
घबरा तो उस वक्त मैं भी गई थी मिस्टर पहलेजा!...
...किन्तु ऐन वक्त पर नागराज आ पहुंचा। मेरी जान उसी के कारण ही बच सकी!
न...नागराज! आपने नागराज को देखा मैडम भारती?
मिस्टर राज को अगर मैंने स्टूडियो के लिए 'वीडियो' लेने को, पहले ही कार से उतार न दिया होता तो उस वक्त ये भी मेरे साथ होते! और तब शायद नागराज से इनकी भी मुलाकात हो जाती!
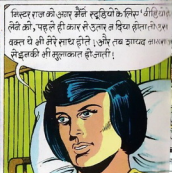
में इनके बारे में ऑफिस स्टाफ
सुन चुका हूं। अच्छा हुआ ये उस
क्त आपके साथ नहीं थे, मिस
रती! वरना इनकी सेहत के लिए
वो सब ठीक न होता!
शायद मिस्टर पहलेजा ठीक कह रहे हैं। अच्छा मैडम भारती, अब मैं चलूंगा...
...क्योंकि मुझे मिस निशा को साथ लेकर आज एक अंग्रेजी फिल्म स्नेक स्ट्राइक के प्रीमीयर पर लोगों के विचारों की फिल्म बनाकर उसे चैनल पर टेलिकास्ट करना है।
ओ० के० मिस्टर राज!
आप जाइए!
ज के वहां से
ने के बाद-
आपने मिस्टर राज को बहुत मुंह लगा रखा है मिस भारती! मेरे विचार में ऐसा नहीं होना चाहिए। नौकर को नौकर का ही दर्जा मिलना चाहिए।
मेरे विचार में ऊंच-नीच का ये भेदभाव पैसे के कारण है। वरना इंसान दूसरे इंसान का मालिक नहीं हो सकता!
दिखने में इस समय राज बिल्कुल सामान्य था। किंतु नागराज के रूप में उसके मस्तिष्क में कई प्रश्न अभी भी खलबली मचाए हुए थे-
EMERGENC
MULICK SO
KAMBLE G
कार के तापमान के आश्चर्यजनक रूप से कम होने के पीछे क्या रहस्य था?...
...सैकड़ों सर्प सैनिक एकाएक कहां गायब हो गए?...
...अष्ट सर्प के मुझ पर हमले के पीछे क्या षड्यंत्र हो सकता है?...
...कौन हो सकता है इस षड्यंत्र के पीछे?
र इनमें से किसी भी प्रश्न का उत्तर उसे नहीं मिल पा रहा था-

पर ऐसा भी नहीं था कि इन प्रश्नों के उत्तर उसे मिलने ही नहीं थे-
जल्दी ही मिलने वाले थे। मगर कुछ व्यवधान अभी और आने बाकी थे-
ENTRY
जल्दी करो भई! फिल्म शुरू हो चुकी है।
SUPERMAN IN Snake Strike (अब हिन्दी में डब)
राज! आज सुबह पूरे स्टाफ ने तुम्हारा जो मजाक उड़ाया, वो मुझे अच्छा नहीं लगा।
हकीकत में ही मैं सांप से बहुत खौफ खाता हूं निशा। बचपन में एक बार केंचुए को सांप का बच्चा समझकर मैं इतना डर गया था कि रातभर न खुद सोया, न अपने मम्मी-पापा को सोने दिया।
तुमने बात मजाक में ही टाल दी, राज!
मेरे विचार से अब तुम्हें अपना सारा ध्यान फिल्म पर केन्द्रित करना चाहिए।...
... क्योंकि फिल्म से संबंधित सवाल भी खत्म होने के बाद तुम्हें ही दर्शकों से पूछने हैं।...
... बाहर हमारी रिकॉर्डिंग यूनिट एकदम तैयार खड़ी है।
राज, कैसा विचित्र प्राणी है मकड़सर्पी! मकड़े, मानव और सर्प का मिला-जुला रूप...
...और अब ये मैट्रो पोलिस की तबाही के लिए आगे बढ़ रहा है...
... सुपर मैन कैसे रोक पाएगा इसे?
14
13
12

सावधान हो जा, मकड़ासर्पी! इस स्परोसोलगन से तू बच नहीं पाएगा!

इससे पहले कि सुपरमैन कुछ कर पाता…

हैरान दर्शकों की समझ में यह रहस्य जरा देर से आना था… मगर नागराज की सर्प इन्द्रियों ने उसे खतरे की चेतावनी दे दी थी। और इसीलिए…

मै… मैं… जरा टॉयेलट से होकर आता हूं निशा!

★ 3D = तीन आयामी।

भागो या न भागो मच्छरो! मकड़ासर्पी को तुमलोगों में कोई दिलचस्पी नहीं है।...
... मकड़ासर्पी तो किसी और को ही ढूंढ़...
...आह!
PARKING
TICKETS
आहा! नागराज! मुझे तेरा ही तो इंतजार था!
मेरा इंतजार? ओह! सीन जिन्दा होने का रहस्य मेरी समझ में आ गया। इसका निशाना मैं ही हूं। यानी नागराज!

अब तू देखेगा मकड़ासर्पी का कहर, नागराज!
ओह! इसने मुझे ठीक वैसे ही चिपचिपे पदार्थ के धागों से जकड़ दिया है, जिनसे मकड़ी अपना जाल बुनती है।
कुछ लोगों को अपने शत्रुओं की प्रत्येक गतिविधियों का पता रखने का जुनून रहता है-
हा हा हा! निश्चित रूप से यहां भी मुझे कामयाबी मिलेगी!
ये तलवारें से मुझे काटने मेरी ओर बढ़ रहा है...
...यहां अगर मैंने इस पर अपनी नागसेना का प्रयोग किया तो हो सकता है मेरे सर्प सैनिक इसे पकड़ लें मगर इस तक पहुंचने के प्रयास में मेरे बहुत से नाग सैनिक इसकी तलवारों से कट सकते हैं।...
...मुझे खुद ही कुछ करना होगा... यानी मकड़ी के इन जालों को काटना होगा!
...और ये काम बड़ी सफाई से कर सकते हैं मेरे नागफनी सर्प!
सच

...और बिल्कुल ठीक समय पर भी...
...अन्यथा मकड़ासर्पी की दोनों तलवारें मेरे किसी न किसी अंग को जरूर मेरे शरीर से अलग कर देतीं।
हाऽऽऽऽऽ ह!
सांय
सट्
अब सबसे पहले मैं मार्शल आर्ट के स्नेकस्टाइल का प्रयोग करते हुए...
...इसके हाथों से ये धारदार शस्त्र गिराता हूं।
तड़
तड़ाक
मगर सिर्फ इसके शस्त्र गिरा कर ही मैं इस पर काबू नहीं पा सकता हूं...
...क्योंकि ये फिर मुझपर वही चिपचिपे पदार्थ छोड़ रहा है।...
...और इस बार इनकी मात्रा पहले से बहुत ज्यादा है। और मुझे इनसे न सिर्फ बचना होगा...

...बल्कि छोड़ने होंगे कुछ सांप! जो कि इसकी नाभि वाले क्षेत्र को जकड़ लें। क्योंकि वह चिपचिपे जाले वहीं से मुझ पर बरसा रहा है।
नागफनी सर्पों का प्रयोग इस बार मुझे इसके जिस्म के टुकड़े करने में करना होगा।
मगर यह क्या? नागफनी इसे काट पाने में असमर्थ रहे और एकाएक गायब भी हो गए?
ओह! मेरे वे सर्प-सैनिक भी गायब हो गए, जिन्हें मैंने उनकी नाभि बांधे रखने के लिए छोड़ा था।
नागराज! अब तेरा बुरा हाल करने वाला हूं मैं!
मगर इसे खत्म करने के लिए अभी मेरे पास है मेरी...
"विष फुंकार!
फऊऊऊ
हा हा हा!
तेरी आखिरी ताकत का इस्तेमाल भी तुझे मेरे हाथों मरने से नहीं बचा पाएगा नागराज!
छोड़! जितनी चाहे विष फुंकार छोड़!

मेरी विषफुंकार का भी इस पर कोई असर नहीं हो रहा !...

फूऊऊऊऊऊ

...मुझे शुरू से इससे हुई अभी तक की मुठ-भेड़ के बारे में तुरन्त सोचना होगा...

...शायद मैं इसकी कोई कमजोरी ढूंढने में सफल हो जाऊं।

...किन्तु इसे खत्म करने का आखिर कोई तो रास्ता होगा !...

...ओह! अगर मैं ठीक सोच रहा हूं तो इसे खत्म करने का तरीका शायद मुझे सिनेमा हॉल के अंदर ही मिलेगा।

मुझे वापस अंदर जाना चाहिए।

शैतान मकड़ासर्पी मेरे अनुमान के मुताबिक मेरा पीछा करता हुआ उसी टूटे हुए रास्ते से हॉल के अंदर आ गया है, जहां से वो बाहर निकला था...
... मेरा दूसरा अनुमान भी सही था। प्रोजेक्टर ऑन है, लेकिन फिल्म रुकी हुई है। और स्क्रीन पर वही सीन है, जिस सीन से ये शैतान बाहर आया था...
... लेकिन इस सीन में स्परोसोल गन भी थी। और अब वह गन भी सीन से गायब है। मतलब एक ही हो सकता है। ...
... और वह यह कि मकड़ासर्पी के साथ-साथ वह गन भी जिन्दा हो चुकी है।...
... क्योंकि पूरा सीन ही एक साथ जिन्दा हुआ होगा!

और यह रही वह स्यरोसील गन।...
...स्क्रीन के ठीक नीचे गिरी हुई।...
...सुपरमैन इसी हथियार से इसको खत्म करने जा रहा था...

...और अगर यह हथियार फिल्म में इस शैतान को खत्म कर सकता है, तो वास्तविकता में भी जरूर करेगा।
अब हथियार हाथ में था, और दुश्मन सामने। देर करना कहां की बुद्धिमता थी–
इस मकड़ासर्पी के साथ ही सबकुछ खत्म हो जाना चाहिए।

लेकिन इसको नागराज का दुर्भाग्य कहना होगा कि इस बार भी वहां छिपी हुई भयंकर नागिन उसकी निगाहों में आने से बच गई थी–

45

कामयाबी! हा हा हा!

और उस सारू के होंठों पर थी एक बहुत ही कुटिलता पूर्ण सफलता की मुस्कान–

इस हादसे से नागराज के जेहन में खलबली मच गई थी–

EXIT

एक के बाद एक हुए अष्ट सर्प और मकड़ासर्पी के हमलों ने यह सिद्ध कर दिया कि इन दोनों घटनाओं का आपस में संबंध जरूर है।...

...और अगर ऐसा है तो निश्चित रूप से ही उन दोनों घटनाओं के पीछे किसी एक ही व्यक्ति का दिमाग है।...

...और ऐसे किसी भी व्यक्ति को मुझे अपना दुश्मन समझ लेना चाहिए।

MEN

किन्तु फिलहाल मेरा वह दुश्मन अपने दोनों मोर्चों पर मुझे मात देने में सफल हो गया है...

...तो वो ऐसी ही तीसरी चेष्टा भी अवश्य करेगा। मगर इस बार शायद वो मुझ तक न पहुंचे बल्कि हो सकता है कि मैं उस तक पहुंचूं...

राज!

ओफ, राज! तुम कहां चले गए थे? तुमने मकड़ासर्पी से नागराज की फाइट मिस कर दी। वैसे हमारे स्टाफ ने कुछ दृश्यों की शूट कर लिया है।
म...मैं टायलेट से निकला तो मकड़ासर्पी को देखकर वापस टायलेट में घुस गया था!
ANUPAM
और सिनेमा हॉल से कुछ ही गज के फासले पर-
वह रहस्यमय फेल्ट हैट धारी एक अजीब हरकत करने वाला था-
ए भैया! सामने से हटो! मुझे कूड़ा गटर में गिराना है!
अरे ओ भइया! कान नहीं हैं क्या? हैं तो फिर कोट का कॉलर हटाओ ताकि मेरी आवाज तुम तक पहुंच जाए। मुझे कूड़ा गटर में...
...अक्!
सफाई कर्मचारी के हाथ लगाते ही ओवरकोट जमीन पर आ गिरा। और वहां पर गूंज उठी कर्मचारी की चीख-
स... सांप?
कोट में सांप!
इसको संयोग नहीं तो और क्या कहेंगे कि उसी वक्त उसी इलाके में, पूरे शहर में फैले हुए नागराज के नागों में से एक नाग, यह दृश्य देख रहा था-
कुछ गड़बड़ लगती है। मुझे इन दोनों नागों के पीछे जाना होगा। पर पहले मैं नागराज को मानसिक संकेत भेजकर यहां पर बुला लूं।

नागराज के, राज के रूप में घटनास्थल पर पहुंचने तक जासूस सर्प, गटर के रास्ते कहीं पर गायब हो चुका था-

क्या हुआ, भई? घबराए हुए से क्यों हो?

म... मैंने कोट व टोप पहने सांप देखे। यहां कुछ गड़बड़ होने वाली है। तुम भी भाग लो।

मैं अगर भाग जाऊंगा तो उस मुसीबत से कौन निबटेगा! तुम बिना डरे मुझको सारी बात बताओ!

और उस सफाई कर्मचारी के मुंह से वहां हुआ हादसा सुनकर नागराज के दिमाग में कई सवाल उमड़ पड़े-

यह निश्चित था कि आज रात उसकी नींद नहीं आनी थी-

कुछ और लोगों की नींद भी आज रात उड़ी हुई थी-

यक्ष राक्षस गरलगंट के आशीर्वाद से उत्पन्न विषकन्या...

चेहरे पर रोषपूर्ण भाव लिए प्रकट हो गई विषकन्या–
विषंधर! तुमने मुझे उसी वक्त नागराज पर हमला करने का आदेश क्यों नहीं दिया? जबकि मकड़ासर्पी को खत्म करने में नागराज सफल हो गया था। और मैं नागिन रूप में घुसकर उसकी विषफुंकार को भी सोख चुकी थी।
इसलिए क्योंकि मैं नागराज की मौत की जंग में महानगर के किसी भी आदमी का व्यवधान नहीं चाहता था...
...अगर तुम वहीं पर नागराज पर हमला करती तो निश्चित रूप से महानगर के कानून के रखवाले तुम्हारे काम में रुकावटें पैदा करते!
फिर मैं चाहता था कि नागराज की मौत से पहले तुम मेरी नागराज से दुश्मनी की वजह जान लो। ताकि तुम नागराज को उसकी मौत की वजह बता सको!
नागराज से तुम्हारी क्या दुश्मनी है विषंधर?
हां! ये उपयुक्त अवसर है तुम्हें नागराज से अपनी दुश्मनी की वजह बताने का!
विषंधर का चेहरा नागराज के प्रति प्रतिशोध के जहर से काला पड़ने लगा–

नागराज से मेरी दुश्मनी की ये कहानी तक्षक नगर से शुरू होती है। जहाँ के राजा तक्षकराज और उनकी पत्नी ललिता निःसंतान होने के दुःख से दुखी थे—

किन्तु रानी के निःसंतान होने का दुःख राजा के हमशक्ल भाई नागपाशा के लिए प्रसन्नता का कारण था। क्योंकि उसे चाहिए था तक्षक नगर का राजपाट और राज खजाना—

किन्तु तभी चमत्कार हो गया। देव कालजयी के वरदान से रानी ललिता गर्भवती हो गई—

इस दुःख से दुःखी होकर राजा तक्षकराज देव कालजयी के समक्ष अपनी जान देने पर उतारू हो गए। तब देव कालजयी पसीजे—

तब उन्होंने अपना सारा विष रानी के गर्भ में पल रहे बालक के शरीर में केन्द्रित कर दिया। जिससे रानी के प्राण तो बच गए मगर बालक मृत पैदा हुआ—

दुष्ट नागपाशा की योजना का पता चलते ही राजा तक्षक-राज ने राज खजाने को राजज्योतिषि वेदाचार्य द्वारा बनाए गए तिलिस्म में सुरक्षित कर दिया –

देवकालजयी के अभिशाप से विकृत और संयोग से घटी दुर्घटना के असर से अमर हो चुके नागपाशा ने खजाना हाथ से निकल जाने की वजह से आग-बबूला होकर राजा तक्षक राज व रानी ललिता की हत्या कर दी–

किन्तु बालक चूंकि देव कालजयी के वरदान से पैदा हुआ था और उसी के श्राप से मृत हुआ था, इसलिए वह न तो मृत था और न ही जीवित अवस्था में। यानी न तो बालक का शरीर सड़ ही रहा था और न उसमें जीवन की कोई प्रक्रिया ही हो रही थी–

इच्छाधारी सांपों का द्वीप नागम द्वीप जिसे नागद्वीप भी कहा जाता है, उन दिनों नागद्वीप के राजा सर्प राज मणिराज का विवाह हुए कुछ ही समय व्यतीत हुआ था–

वह अद्भुत स्वप्न देखने के बाद मणिराज हड़बड़ा कर उठ बैठे और उन्होंने सारा वृतांत रानी मणिका को सुनाया। जिसे सुनने के बाद-

देव कालजयी के आदेश का अविलम्ब ही पालन करना होगा महाराज!

ठीक है। मैं महामंत्री जी को भेजने की व्यवस्था करता हूं।

काश! महात्मा कालदूत इस समय समाधि में लीन न होते। इस समय तो उनसे इस विषय पर विचार-विमर्श करना भी संभव नहीं है।
और फिर- कुछ ही दिनों की यात्रा के पश्चात, महामंत्री देव कालजयी के बताए हुए स्थान पर आ पहुंचे-
ओह! यह तो मृत लग रहा है। न ही सांस चल रही है और न ही दिल की धड़कन!
और जब महामंत्री शिशु को लेकर नागद्वीप पहुंचे तो द्वीप के एक निर्जन तट पर महाराज एवं महारानी स्वयं उनकी प्रतीक्षा कर रहे थे-
इसको शीघ्रातिशीघ्र लेकर चलना होगा। मैंने इसके गुप्त रूप से रहने की सारी व्यवस्था कर दी है...
... हम इसको उस निषिद्ध स्थल पर लेकर जाते हैं महामंत्री जी। आप एक दासी और राजवैद्य को लेकर तुरंत द्वीप के उत्तरी सिरे पर बनी पहाड़ी पर आ जाइए। निषिद्ध स्थल वहीं पर है।
जो आज्ञा, महाराज!
महामंत्री तुरंत ही राजवैद्य को लेने के लिए रवाना हो गए।

और फिर- निषिद्ध क्षेत्र में स्थित एक गुफा में-
इस बालक के अंदर तो महात्मा कालदूत के विष से भी ज्यादा तेज जहर मौजूद है...
इसका क्या अर्थ हो सकता है राजवैद्य?
इसका एक ही अर्थ है राजन! इस बालक के अंदर देव कालजयी का विष मौजूद है।
ओह! शायद इसीलिए देव ने ऐसी आज्ञा दी है।
अगर देव ने ऐसी आज्ञा दी है तो इस शिशु का इलाज अवश्य हो सकता है। मैं कोई आश्वासन तो नहीं दे सकता परन्तु इसका इलाज आरंभ कर सकता हूं। अगर देव ने चाहा तो ये बालक अवश्य ठीक हो जाएगा।
राजवैद्य ने शिशु की चिकित्सा आरंभ की-
और वर्षों पर वर्ष बीतने लगे-
शिशु पर तो वैसे चिकित्सा का कोई असर होता नहीं दिख रहा था...
...परन्तु यह समय था विश्वास और धैर्य रखने का-

और धैर्य मुझमें भी कूट-कूटकर भरा था। मुझमें यानी राजतांत्रिक विषंधर में—
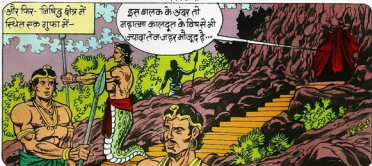
नागद्वीप के राज सिंहासन पर कब्जा करने के लिए मुझे वक्त की प्रतीक्षा करनी होगी...

...मुझे केवल महात्मा कालदंत की तरफ से ही खतरा है। क्योंकि मुझे केवल उसका जहर मार सकता है।

खैर! उसका तो कोई न कोई रास्ता मैं निकाल ही लूंगा...

...फिलहाल तो मैं यहां पर यह पता लगाने आया हूं कि आखिर महाराज ने नागद्वीप के इस हिस्से को निषिद्ध क्यों घोषित कर रखा है?...

...और राजवैद्य को लेकर आखिर महाराज रोजाना यहां क्या करने आते हैं?

नोट: पाठक, कृपया यह देखकर भ्रमित न हों कि चालीस वर्षों के पश्चात भी राजा नागमणि एवं नागद्वीप के अन्य वासी वृद्ध नहीं हुए हैं। इच्छाधारी नागों की आयु, मानवों के मुकाबले बहुत धीमी गति से बढ़ती है।
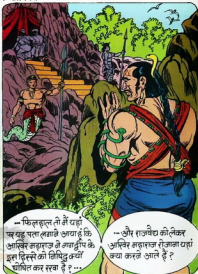
...देव कालजयी के आशीर्वाद से मिले उस बालक के रूप में। जिसके जीवित हो उठने की आस में पूरे चालीस वर्ष से हम प्रतीक्षारत हैं...
...और हमने निश्चय किया है कि जीवित हो उठने के बाद, हमारे बाद नाग द्वीप का वारिस वही बालक होगा।
आपने तो मेरे मुंह की बात छीन ली महाराज!
उस वार्तालाप को सुनने के बाद नाग द्वीप के उस रहस्य की परतें मेरे मस्तिष्क में परत दर परत खुलती चली गई थीं—
ओह! तो नागद्वीप के इस निषिद्ध क्षेत्र में उसी बालक को रखकर उसका उपचार किया जा रहा है ताकि नागद्वीप का वारिस तैयार किया जा सके!
उस रात ही राजा मणिराज और रानी मणिका के सपनों को धूल में मिलाने निषिद्ध क्षेत्र में आ पहुंचा मैं—
आप? राज तांत्रिक विषंधर! यहां से तुरन्त चले जाएं। अन्यथा विवश होकर हमें आपको हिरासत में लेना होगा...
मूर्ख!

...मैं यहां से खाली हाथ लौट जाने के लिए नहीं आया हूं...

...चाहे इसके लिए मुझे तुम्हारे प्राण ही क्यों न लेने पड़ें।

मैं नागद्वीप के सभी कानूनों को भंग करके निषिद्ध क्षेत्र में प्रवेश करके...

...इसको अपने हाथों से खत्म करके मैं देव कालजयी से दुश्मनी तो मोल नहीं ले सकता। लेकिन मैंने महामंत्री को नागद्वीप तक लेकर आने वाले नौका चालक को खत्म करने से पहले उससे उस स्थान का पता पूछ लिया था, जहां से वह इस बालक को लेकर आया था।

...क्योंकि बाद के घटनाक्रम से यह स्पष्ट हो चुका था कि वह शिशु मरा नहीं था। बल्कि मेरे जाने के कुछ ही समय पश्चात उसमें जीवन का संचार हो गया था–

राजवैद्य का इलाज काम कर गया था–

नागद्वीप में कोई भी ऐसा नहीं था जो सच्चाई को जानता हो–

बालक गायब हो गया है, यह जानकर रानी चकरा कर गिर पड़ीं–

कम से कम उस वक्त मैंने यही समझा था–

जबकि सच्चाई कुछ और ही थी–

बधाई हो महाराज! महारानी जी माँ बनने वाली हैं!

ओह! क्या सच राजवैद्य!

मेरे लिए यह बहुत बुरा समाचार था–

...लेकिन होनी के आगे सफल न हो सका। मेरी हर योजना विफल हो गई...

...और समय पूरा होने पर रानी ने एक सुन्दर कन्या को जन्म दिया। जिसका नाम रखा गया विसर्पी–

उम्मीद की सारी किरणें बुझ चुकी थीं–

महायज्ञ पूर्णतय: गुप्त था। उसकी किसी को भनक लगने का मतलब मेरी निश्चित मौत था। अत: उस व्यक्ति का पता लगाना मेरे लिए निहायत आवश्यक था, जो कि एक नेत्रहीन बूढ़े के रूप में मेरे सामने था-

मेरी ज्योतिषिय गणना के मुताबिक नागराज के वे अज्ञात चालीस वर्ष 63 डिग्री अक्षांश और 9 डिग्री देशान्तर पर किसी स्थान पर गुजरे हैं। और मैं शायद उस स्थान पर या उसके बहुत निकट हूं।

ये नेत्रहीन बूढ़ा नागराज को कैसे जानता है?

ठहरो! अगर तुमने फौरन ही मुझे ये न बताया कि तुम कौन हो, और यहां क्यों आए हो? तो मैं अभी तुम्हारे प्राण 'हर' लूंगा।

मेरा नाम वेदाचार्य है। अगर तुम इसी द्वीप पर रहते हो तो मुझे तुम्हारी मदद की जरूरत है।

वेदाचार्य ने मुझे बताया नागराज के विषय में। और जो कुछ उसने मुझे बताया, वह मेरे भविष्य के लिए बहुत खतरनाक साबित हो सकता था क्योंकि उसके मुताबिक नागराज वही बालक था, जिसे पच्चीस वर्ष पूर्व मैंने ही नदी की लहरों के हवाले कर दिया था-

...समुद्र में फेंक दिया-

धपाक
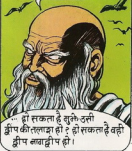
और मेरी आंखों के सामने उसके शरीर को लहरें दूर बहा ले गईं-

मेरे पास उसका पीछा करने का वक्त नहीं था-

क्योंकि मुझे यज्ञ कुंड में डालनी थी अंतिम आहुति-

यक्ष राक्षस गरलगट प्रकट हुए और तब मैंने महात्मा कालदूत के विष की काट के स्थान पर नागराज के जिस्म में मौजूद देव कालजयी के विष की काट के रूप में तुम्हें यक्ष-राक्षस से मांग लिया···

··· क्योंकि महात्मा कालदूत उस सूरत में हमारे मार्ग में नहीं आएंगे··· जबकि विसर्पी मेरी तंत्र शक्ति के बल पर पैदा किए गए किसी शक्तिशाली युवक की पत्नी बन जाए।

उस सूरत में भी एक तरह से राजा मैं ही बन जाऊंगा। क्योंकि मणिराज का कोई उत्तराधिकारी न होने के कारण कालदूत को उनके दामाद को ही उनका उत्तराधिकारी चुनना होगा, जिसकी नकेल मेरे हाथों में होगी···।

विषंधर। तुमने आरंभ में कहा था कि महानगर में नागराज को मौत देने पर कानून के रखवाले व्यवधान उत्पन्न करेंगे···

··· तब फिर तुम उसे कहां मारना चाहते हो?

यहीं!
इसी जगह पर विषकन्या!
क्या मतलब?
मतलब नागराज का भेजा ये जासूस सांप...
...जो हमारा पीछा करता हुआ यहां आया है...
कचयड़ड़ड़ड़
...और अब जिससे मानसिक संपर्क स्थापित करके अभी-अभी यहां पहुंचा है...
...खुद नागराज!
नागद्वीप के राजतांत्रिक विषंधर के सामने विषकन्या के हाथों मरने। हाहाहा।
ओह! उसने मेरे सर्प सैनिक को मार डाला।
यह नागराज का दुर्भाग्य ही कहना होगा। उसे कि वह उस स्थान पर ठीक उसी वक्त पहुंचा था, जब विषंधर सारी कहानी विषकन्या को सुना चुका था–
आखिर मैं सही व्यक्ति तक आ ही पहुंचा... उसके तीसरे हमले से पूर्व...
...लेकिन नागद्वीप का ये तांत्रिक विषंधर तो राजकुमारी विसर्पी और राज परिवार का खास विश्वासपात्र है। ये आखिर मुझे क्यों मारना चाहता है? क्या विसर्पी ने इसे भेजा है? मगर वह ऐसा क्यों करेगी?
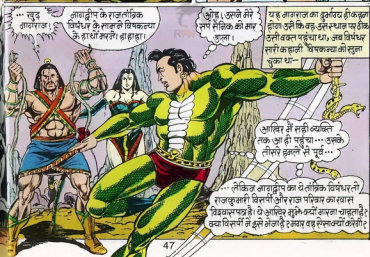
एकाएक ही नागराज का चेहरा कठोर होता चला गया-
विषंधर! अब तुम मुझे बताओगे कि अपनी तंत्र विद्या का गलत इस्तेमाल करके तुमने अष्ट सर्प और मकड़ा-सर्पों के जरिए मुझे मारने की चेष्टा क्यों की?
जवाब में विषंधर ने एक विषाक्त ठहाका लगाया फिर जहरबुझे स्वर में बोला-
उस वक्त मैंने तुझे मारने की कोशिश नहीं की थी...
...उस वक्त तो मैं विषकन्या की मदद कर रहा था।
हाँ, नागराज! मैं विषकन्या हूं। तेरी मृत्यु!
ओह! मेरे सर्प फिर गायब हो गए!
नागराज को बहुत जल्दी ही उन सर्पों के गायब हो जाने का रहस्य समझ में आ जाने वाला था-
विषकन्या सांप कैसे छोड़ रही है?
ओह! ये तो नागफनी सर्प हैं!
हा हा हा! हैरान हो गया न नागराज!

ये कन्या देव कालजयी के परम शत्रु यक्षराक्षस गरलगंट द्वारा यज्ञकुंड से उत्पन्न की गई है, नागराज! इसके अन्दर तेरी शक्तियों को सीख सकने की क्षमता है।...

...और अब इससे तुम्हारा मुकाबला टक्कर का होगा!

नागराज की समझ में आ गया था सर्प शक्तियों के गायब होने का रहस्य-

मगर अब देर हो चुकी थी-

बचने की कोशिश मत कर नागराज! वरना तेरी मौत और दर्दनाक हो जाएगी।...

...शान्ति से खड़ा रहेगा तो तुझे मैं एक आसान मौत दूंगी।

फ़ ऊ ऊ ऊ

ओह! ये मेरी विष फुंकार का प्रयोग मुझ पर ही कर रही है।...

किसी भी ज़हर का काम होता है उन रक्त कणों को प्रभावित करना, जो शरीर को जिन्दा रखने के लिए आवश्यक आक्सीजन को ग्रहण करते हैं।...तो भला नागराज पर अपनी ही विष फुंकार का असर घातक कैसे न होता-

मेरा दम घुट रहा है। अपनी सांस रुकती सी महसूस हो रही है मुझे!

मैं इससे शारीरिक शक्ति में इस वक्त जीत नहीं पाऊंगा। क्योंकि एक तो सर्पों के शरीर से बाहर निकल आने के कारण मेरी शक्ति वैसे ही क्षीण हो गई है, और ऊपर से ये विष-फुंकार मेरा दम घोटे दे रही है...

...वैसे भी अगर मैंने अपनी किसी भी शक्ति का प्रयोग इस पर किया, तो ये उस शक्ति को सोखकर, वापस उसका प्रयोग मुझी पर कर देगी।

यानी उस सूरत में, मैं अपनी शक्तियों का प्रयोग इस पर नहीं, बल्कि खुद अपने पर करूंगा!

हे देवकालजयी! ये कैसी विषम परिस्थिति में फंस गया हूं मैं!

जब मैं विषकन्या पर वार नहीं कर सकता, तो फिर मेरा उससे मुकाबला कैसा?..

...मैं सिर्फ इसके वारों से बचते हुए इसे रोकने की चेष्टा करूंगा।

नागराज ने मुट्ठी भर मिट्टी विषकन्या की आंखों की तरफ उछाल दी-

विषकन्या की आंख में पड़े धूल कणों को मेरा ये दण्ड पलक झपकते ही खींच लेगा !
कुछ देर के लिए ही बेबस हुई थी विषकन्या –
लेकिन इन कुछ पलों ने नागराज को सोचने का वक्त दे दिया –
यह सारी बांबियां इस स्थान पर पहले नहीं थीं। यह जरूर विषंधर की तंत्र शक्ति का कमाल है...
...लेकिन इस तंत्र शक्ति को संचालित करने वाला कोई 'यंत्र' भी होना चाहिए, जो इस स्थान के साथ-साथ, विषंधर की तंत्र साधना से उत्पन्न हुई विषकन्या को भी संचालित करता है !
...और वह यंत्र सिर्फ वह चमकती खोपड़ी ही हो सकती है।
नागराज ! मुझसे बचने के तरीके सोच रहा है ? हा हा हा ! ये रहा मुझ पर वार करने का जवाब !
तेरी आंखों पर तेरी स्नेक स्टाइल शक्ति का वार !
ओह ! इस शक्ति का वार मैंने मकड़ासर्पी पर किया था !
विषकन्या के उस वार से बचने की भरपूर चेष्टा के बाद भी नागराज अपनी आंखों के निचले हिस्से पर हुए इस वार से बुरी तरह तिलमिला उठा था –
अब मैं तुझ पर तेरा इतना विष बरसाऊंगी नागराज कि तेरी हड्डियां तक गलकर इसी मिट्टी में मिल जाएंगी !
फूऊऊ
उफ ! मैं अपनी आंखें नहीं खोल पा रहा ... और शायद विषकन्या की छोड़ी विष फुंकारें मुझसे टकराने ही वाली हैं !
लगता है आज मेरी मौत का श्रेय लेकर ही रहेगी विषकन्या !

विष फुंकार के घने कोहरे में गूंज उठी एक दर्दनाक चीख-
आआआआआआआईईई
जिसे सुनकर भयंकर अट्टहास छूट पड़े विषंधर के कंठ से-
विषकन्या! तुमने सुनी? ये चीख नागराज की थी। उसकी आखिरी चीख। हा हा हा!
मुझे अपने उद्देश्य की सफलता का हर्ष नागराज की लाश को देखने के बाद होगा। उफ!
मगर... मगर ये क्या? ये तो नागराज नहीं, कोई और इच्छाधारी सर्प है। और इसने तुम्हें डस लिया है, मगर...
...नागराज कहां गया? अरु!
नागराज यहां है शैतान विषंधर!
ये तो इच्छाधारी सर्प है। और ऐसे सभी सर्प नागद्वीप पर ही होते हैं। मेरी जान बचाने के लिए इसने अपनी जान क्यों कुर्बान करदी है?
अचानक सारा खेल बदल गया था। और इस बदले हुए माहौल में ठगी सी खड़ी विषकन्या अभी उबर भी न पाई थी कि -
धड़ाक
मैं जानता हूं कि अब तू मुझ पर मेरी सर्प शक्तियों का प्रयोग करेगी...
मगर उससे पहले ही मैं तेरे इस प्रयास पर भी अवरोध लगा देना चाहता हूं।

इस कीचड़ में गिरने के बाद तेरे जिस्म के वे सभी रोम छिद्र बंद हो जाएंगे, जिससे सूक्ष्म रूप में निकलकर सर्प शक्तियां मुझ पर वार कर सकती हैं।
और जब तू इस कीचड़ से उठकर खड़ी होगी, तो रोम छिद्रों के बंद होने के कारण मेरी सर्प शक्तियों को तू कहीं खोज पाएगी!
ओफ़!
नागराज के लिए उसके बारे में जानना निहायत ही जरूरी था, जिसने ऐन वक्त पर ढाल के रूप में नागराज के सामने आकर विषकन्या की छोड़ी सारी विष फुंकार को अपने जिस्म पर भुगत लिया था-
आ आ ईई
विष फुंकार के घने कोहरे में गूंजने वाली चीख उसी की थी-
जिसका नाम था-
म... मेरा नाम विषवर है। म... मुझे महात्मा कालदूत ने तुम्हारी विषंधर से रक्षा करने के लिए भेजा था...
...क्योंकि विषंधर के महायज्ञ के बाद उन्हें विषंधर के उद्देश्य का पता चल गया था!

महायज्ञ! कैसा महायज्ञ?
यह तो महात्मा कालदूत ने मुझे बताया नहीं! परन्तु उन्होंने मेरे विष में ऐसी विशेषता भर दी है कि अगर शत्रु के रक्त में प्रवेश कर जाए तो रक्त के लाल कणों की संख्या को बढ़ाकर उसमें 'सांद्रता' पैदा कर देता है। जिससे रक्त के परिवहन में बाधा आने लगती है।...☆
... और उस सूरत में विषकन्या तुम्हारी सीखी गई सर्प शक्तियों का प्रयोग नहीं कर सकती। क्योंकि सभी सूक्ष्म रूप धरे सर्प रक्त के गाढ़ेपन की दलदल में फंसकर रह गए होंगे।...
... मगर विषकन्या की छोड़ी विष फुंकार, जो कि तुम्हारा ही विष है नागराज, उससे मैं नहीं बचूंगा। अलविदा नागराज!
इधर अपनी उस असफलता से बुरी तरह बेचैन हो उठा विषंधर—
विषकन्या! उठो विषकन्या! तुम्हारा मकसद नागराज की मौत है।
मैं अपना मकसद जरूर पूरा करूंगी। लेकिन अभी तुम मुझे यहां से ले चलो। क्योंकि अपनी शक्तियों से विषवर के विष को काटने के लिए मुझे कुछ देर लगेगी। सिर्फ कुछ देर...
... और उतनी देर के लिए हमें नागराज से दूर जाना पड़ेगा!
नागिन के रूप में परिवर्तित होकर विषंधर से लिपट गई विषकन्या-
नागराज, जिस तरह तेरे इस मददगार ने बीच में आकर विषकन्या को तड़पने पर विवश कर दिया...
... अब ठीक उसी तरह मैं महानगर के लोगों को तड़पाऊंगा। जिन लोगों का तू रक्षक है। और तू उनकी मदद नहीं कर पाएगा...
... क्योंकि मौत तेरे भी सामने खड़ी होगी!

☆ सांद्रता = गाढ़ापन

विषंधर, विषकन्या के साथ, सर्प रूप में बदल-कर एक बांबी के अंदर गायब हो गया है...
...अपनी इस हार से तिलमिलाया विषंधर पता नहीं वहां कौन सा तूफान खड़ा करने वाला है...
...इस बीच मुझे महानगर में फैले अपने सर्प सैनिकों को भी मानसिक संपर्क द्वारा सावधान करना होगा!
...और मुझे मेरे एक सर्प सैनिक के मानसिक संदेश प्राप्त हो रहे हैं कि विषंधर...
...महानगर में चिल्ड्रन पार्क के नजदीक पहुंच चुका है।
WATER
TICKET
Children PARK
हा हा हा! नागराज! ये सड़क जो महानगर वासियों का बोझ उठाती है, अगर उन पर बोझ बन जाए तो कितना मजा आएगा!

...तब और भी मजा आएगा जब महानगर का रक्षक इस तबाही को देख तो सकेगा मगर कुछ कर नहीं पाएगा!...
FUN
...क्योंकि कुछ करने के लिए उसे इस बुलबुले से बाहर आना पड़ेगा। और मैंने तंत्र शक्ति से बुलबुले की दीवारों को इतना मजबूत कर दिया है कि उसे तोड़ने में देव कालजयी के दांतों तले भी पसीना आ जाएगा!
ओह! विषंधर ने मंत्र किरणों से बुलबुले को विशालकाय रूप देकर मुझे उसमें कैद कर दिया है।...
...और इस बबल में तो मेरा दम घुटने लगा है। क्योंकि छोटे से बड़े हुए इस बबल में हवा सिर्फ छोटे बबल जितनी ही है।
मुझे फौरन यहां से निकलना होगा। अपनी और महानगरवासियों की प्राण रक्षा के लिए! मगर कैसे?
आखिर इस कैद से निकलने का कोई न कोई रास्ता तो जरूर होगा!
रास्ता है नागराज!
और वो रास्ता है तेरी मौत!
विषकन्या!
नागराज के लिए निश्चित रूप से खतरनाक चल थे-

... क्योंकि नागराज एक ऐसी जगह पर था, जहां अगर विषकन्या द्वारा विष फुंकार छोड़ दी जाती तो फिर नागराज के पास उससे बचने के लिए कोई रास्ता नहीं था-

विषकन्या वही करने जा रही थी। वो नागिन नागराज की मौत के बेहद निकट पहुंच चुकी थी-

फूऊऊ

अब मुझे देखना है कि अपनी सांसों को तू कितनी देर तक अपने अधिकार में रख पाएगा नागराज!

सिर्फ उतनी देर, जितनी देर मैं सांस रोक पाने में सफल रह पाया...

... और सांस तो मेरी पहले ही इस ऑक्सीजन मुक्त वातावरण में रुकी जा रही है। ओफ्फ!

उस इच्छाधारी सर्प के कारण मैं कुछ देर के लिए विवश जरूर हो गई थी, नागराज! किन्तु अपना उद्देश्य पूर्ण होने से पहले मैं यहां से जाने वाली नहीं थी!

अब इस मुसीबत से बचने का जो रास्ता मैंने सोचा है, उसको आजमाने का समय आ गया है!...

... और उसके लिए मुझे अपने उस सर्प विषदंश को मानसिक संकेत भेजना होगा, जिसे मैं खोपड़ी का रहस्य जानने के लिए बांबियों वाले स्थान पर रखी चमकती खोपड़ी के अन्दर छोड़ आया था!

नागराज का मानसिक संकेत, बुलबुले को चीरता हुआ...

उसी क्षण बबल हवा में गायब हो गया और नागराज का जिस्म हवा में लहराया–

विषकन्या रूप परिवर्तित करके न सिर्फ नागिन बन गई थी, बल्कि नागराज के सैनिकों की पकड़ से भी छूट निकली थी-

दंड टूटते ही बाजी एक बार फिर नागराज के हाथों में आ चुकी थी –
विषंधर! मुझे खत्म करने के सपने देखना अब बंद कर दे क्योंकि तेरी सारी चालें उल्टी पड़ चुकी हैं!
लेकिन नागराज अपनी तरफ बढ़ते उस चट्टानी घूंसे को नहीं देख रहा था –
लेकिन ये शैतान सड़क से पैदा हुआ है। और सड़क बनी होती है तारकोल से। जो कि अधिक ऊष्मा पाकर पिघल जाता है।
तो फिर क्यों न ये कोशिश भी करके देख ली जाए।
नागराज की कलाइयों में से निकली सर्प-सेना की मजबूत कुंडली से…
…सड़क पर पलटे और रुके हुए वाहनों के पेट्रोल पाइप बच न सके –
सड़क पेट्रोल से तर होने लगी –
ओह! विषंधर से लड़ाई के चक्कर मेरा ध्यान इस पर से हट गया था और मेरी एक क्षण की चूक का लाभ उठाने से ये भी नहीं चूका! लगता है दंड टूटने के बाद भी इसमें तंत्र शक्ति का कुछ अंश बचा रह गया है!
अब जरूरत थी सिर्फ एक चिंगारी की –
और उस कमी को पूरा कर दिया घटनास्थल पर पहुंच चुकी पुलिस की गोली ने –
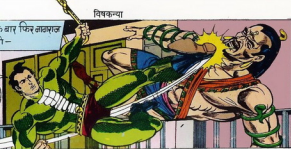
अगले ही पल- सड़क दानव का पेट्रोल से भीगा, तारकोल का शरीर धधक उठा-
सड़क दानव तो गया। मगर विषंधर कहीं दिखाई नहीं पड़ रहा। लगता है अपनी सारी चालों के पिटने से हताश होकर वह विषकन्या के साथ वापस भाग गया है!
मेरे सर्प सैनिक भी उसकी गंध नहीं ले पा रहे! विषंधर जैसे राज तांत्रिक की तंत्र शक्ति के कारण शायद ऐसा ही रहा है...
...मगर उम्मीद है कि विषंधर अब महात्मा कालदूत के डर से नागद्वीप भी नहीं लौटेगा। और विषकन्या जैसी शक्ति भी उसे अब दोबारा इतनी जल्दी नहीं मिल पाएगी।
अब जो सवाल मेरे जेहन में बचा है वो ये है कि राज परिवार का खास विश्वास पात्र होने के बावजूद भी विषंधर ने विषकन्या के साथ मिलकर मेरे प्राण लेने की कोशिश क्यों की? और अपने इस सवाल का जवाब मैं भविष्य में विसर्पी से ही लूंगा!
समाप्त